ORIGINAL RESEARCH PAPER

Hindi

हरियाणा लोकनाट्य में सौंदर्य–निरूपण

KEY WORDS:

राम चंद्र | पुत्र श्री राजा राम गांव रोड़ी जिला सिरसा,हरियाणा। पिन 125201

लोक साहित्य ने अपनी विविध विधाओं के माध्यम से मानव – मन पर अमिट छाप छोड़ी है , जो आने वाली पीढ़ियों के लिये प्रेरणास्त्रोत का काम करेगी। लोक साहित्य में लोक संस्कृति व लोक भाषा का पक्ष बड़ा सबल है। लोक जीवन रूपी सागर तक जीने की सीढ़ी है लोक साहित्य। लोक साहित्य में लोकगीतों , कथाओं , गाथाओं , लोकनाट्यों व लोकगाहों की पूर्णरूप से व्याख्या होती है। लोकगीतों और लोककथाओं के संदर्भ में ही लोक साहित्य एंव सस्कृति की अन्तसलिला के रहस्य को हम ढूंढ कर लोक के परम्परागत जीवन की आन्तरिक अभिव्यक्ति का उद्घाटन कुछ अंशों में अवश्य कर सकेंगे।

लोक मानस सारा दिन की थकान, मानसिक अशान्ति, आपसी कलह, राजनीति, ईर्श्या, नास्तिक भाव आदि सबसे दूर हटकर स्वांग में प्रेम तथा सौंदर्य निरूपण से, साधारणीकरण करके अपनी शारीरिक थकान एवं मानसिक शान्ति प्राप्त करना चाहता है।

हरियाणा लोकनाट्य में नारी सौंदर्य को सबसे अधिक स्थान दिया गया है, परन्तु सांग ''सत्यवान–सावित्री'' में सावित्री–सत्यवान के रूप सौंदर्य को स्थापित करता है। धीरोदात नायक के रूप सौंदर्य के समान सत्यवानशील एवं सौंदर्य की प्रतिभूति है–

''मीठी–मीठी प्यारी लागै गूंज रही बोल तेरी,
मोटे नैन चोड़ा माथा लाम्बी कर्दन गोल तेरी,
तीरा के निसाने मारै भूजा है सुडौल तेरी,
चेहरे की गोलाई कैसे चन्द्रमा सी खिली हुई,

––––

धड़कने का नाम नहीं, ह्रदय है गंभर तेरा,
दोनो रान मिली हुई, ठुकमा है शरीर तेरा,
सामना करैगा कौन युद्ध के मां वीर तेरा।

सावित्री की सास उसके सौंदर्य का वर्णन करती हुई यौवनावस्था का वर्णन करती है–
''पड़ती मद जोबन की झोल, सुंदर रूप घणा अनमोल,

बहू तेरे मीठे–2 बोल, मरे ह्रदय मैं रमै,
हुआ सुख हमें, वा दुख की समै, बहू पाछै नै जा थी।

सांग ''पूर्णमल'' में पूर्णमल की मौसी प्रथम–दर्शन करते ही उसके रूप–सौंदर्य पर मोहित हो जाती है। रानी नूणादे एवं पूर्णमल के रूप सौंदर्य को कवि ने कुशलता से चित्रित किया है–

पहलम तै राणी के मन मै ख्याल नहीं था गंदा।
इयोढ़ी ऊपर खाड्या देख्या, पणवासी कैसा चंदा।।
पूर्णमल का रूप सवाया, राणी का रंग मंदा,
पकड़ कालजा तड़फण लाग्यी पड़्या ईश्क का फंदा।
जणू किसे शिकारी ने दिया मार्‌या दुगाड़ा भर क्ये।।

पूर्णमल मौसी को संबंध तथा अवस्था का ध्यान दिलाता है। कवि की उपमा देखिए–
क्यूं तेरे दिल मै भूल पड़ी री,
मै पास्यंग तूं एक धड़ी री,
घूंघट करके हुई खड़ी री, मुखड़ा फेर क्ये।।
नूणादे पूर्ण को अपने रूप सौंदर्य की ओर आकर्शित करना चाहती है–
ईश्क बली नै करदयी तंगी, तूं मेरा बणज्या नै सत्संगी,
जैसे पत्यां बीच नारंगी, लिपट रह्या बदन फर्द मैं।।

नूणादे पूर्ण को उसके यौवन रूपी पके हुए सेब, संतरे और अखरोट तोता बनकर खाने का आग्रह करती है। यौनाकर्श से वासना उत्पन्न करती है–

ईश्क बली नै करदयी तंगी, तूं मेरा बणज्या नै सतसंगी,
जैसे पत्यां बीच नारंगी, लिपट रहया बदन फर्द मै।।

नूणादे पूर्ण को उसके यौवन रूपी पके हुए सेब, संतरे और अखरोट तोता बनकर खाने का आग्रह करती है। यौनाकर्श से वासना उत्पन्न करती है–

जी चाहवै जब आजमाल्ये, दो बाजी चोपड़ की लाल्ये।
सुआ बणक्ये खाल्ये बाग मै समो पै फल आया हो,
पके हुए सेब संतरे अखरोट।।

कुच–सौंदर्य को कवि ने ''मेवे'' का प्रतीक तथा ''अंगूर किसमिस सेब संतरे'' को यौवन में मस्त शरीर पर चढ़कर कामाग्नि–शान्त करने का बिम्ब प्रस्तुत किया है। पूर्णमल से माता कहलवाना उसका यौवन गवाही नहीं देता।

अधर पान का आग्रह नूणादे द्वारा एवं केले जैसे शरीर की शोभा का सुंदर चित्रण देखिए–
तेरे पैलाली रच ज्यागी, खाले देसी पानक करके,
रंग भरया केले कैसी गोभ मै, जणूं दारू भरी तोब मै।
नूणादे कामाग्तिन से है, पीड़ित किस प्रकार दिल,
मै धैर्य धारण करूं, वह मान चाही बर्सा''

अर्थात् काम क्रीडा में लीन होना चाहती है।
क्यूं कर दिल मै धीरज धरूं, बता इब जतन कोण सा करूं।
मै मरू तिसाई, मेरी तप्त बुझा दिये, कर मन चाही बरसात,
दई इश्क जले नै भून मै।

कवि की उपमा लोक–रंगत से पूर्णतया रंगी हुई हैं पूर्णमल –नूणादे की उपमा ''चाट व नमक'' से दी है–

मेरा तेरा मेल इसा जणुं पड़ग्या नमक चाट पै,
आ राजी हो क्ये लेट खाट पै, मैं देखूं मुट्ठी भरके।।

रूप सौंदर्य पर देवता ऋशि मुनि तक अपने मार्ग से डिग चुके। दमयन्ती के सौंदर्य पर देवताओं की भी नियत खराब हो गई थी। सौंदर्य की एक झलक–

''जो दमयन्ती के दर्शन पाले, देवता तक के मन भर माले,
दूर के लम्बे–लम्बे काले–काले, घूंघट वाले केश,
दमयन्ती तै चलो मिलै जी।।

नारी के अधरों की लालिमा, केशों की सघनता, क्षीण कटि भाग नितम्बो तथा जहान स्थली मांसलता आदि को, सौंदर्य का आधार माना गया है।

नल देखता है कि दमयन्ती के सौंदर्य में ईश्वर ने कोई कसर नहीं छोड़ी, किसी अंग में कोई गल्ती नहीं है। ''पतली–कमर–मोटे नयन'', ''रूप के निसाने'' रणभूमि में चलती गोली के समान है–

रूप की ठीक ज्योति सी बलती, नहीं थी कि अंग में कोई गलती,
परि की जीभ ना उथलती, मुस्करावै मन–मन मै।
पतली कमर लहराती चालै, मोटे–मोटे नैन कमल से हालै,
सखी बोलै ना चालै, सांस से घालै भरी जवानी पन मै,
लख्मीचंद कहै पाने दोनूं, देवता तक भीमा ने दोनूं,
रूप के निसाने दोनूं, जणूं गोली चालै रण मै।

नल का मन बीन के लहरे पर सांप की तरह चंचलायभामन है इसलिए दमयन्ती उस पर न्यौछावर है–

वारू ज्यान रूप गहरे पै, मनभेरा चलै ज्यूं सांप लहरे पै,
मेरे रक्षक महल मै खाड़े पहरे पै, तू आया कड़ेतै भागा।

ब्राह्मण ''मीरा बाई'' के अद्भूत सौंदर्य का वर्णन उदयपुर के राजा के समक्ष करते है–
मोर पपीहे कोयल कैसी, मीठी बाणी बोले,

चमक का चाकू मारय दूर तै, मेरे जिगर नै छोलै,
एक आधी बे मन मोहण नै मुँह की सिलवट खोलै,
आशिक नर मारण की खात्यर, हूर लटजती डोलै।
कारीगर करतार तनै किसी मूरत घड़ी सै न्यारी,
लाम्बी गर्दन आख्य कटीली, मुखड़े की छवि प्यारी,
चाल चलै जणू हंस तालके, पल मै लेत उड़ारी,
इतर की खुशबू छूट रही जणं रूत पै केसर क्यारी।

इसी प्रकार सिपाही भी महाराज उदयपुर के समक्ष मीरा बाई के सौंदर्य का वर्णन करते हैं कि मीरा को देखने के बाद उदयपुर तक ''मरते पड़ते'' आए है। मीरा के नयन रूपी तीरों का एक निशाना भी खाली नहीं जाता। उसका शरीर तराजु के समान है, जिसके पलड़े रूपी अंगों में कोई त्रुटि नहीं है। परन्तु मीरा के सौंदर्य रूपी बगीचे को सींचने के लिए माली रूपी आलम्बन नहीं है–देखिए मीरा के चरित्र एवं सौंदर्य की मिश्रित झलक–

दो नैना के तीर चलाते एक निसानाबी खाली कोन्य,
यहां तक आ लिए गिरते पड़ते सोधी तलक संभाली कोन्या,
ताखाड़ी ज्यूं निवै बोझ तोलण की इसी लचक पड़ै डोलण की,
सीरी अमर करै बोलण की, अमृत तै कम प्याली कोन्या,
बिसर ना देख्यी चाल वण मै, मन मोह लिया नजर मिलण मै,
कसर ना देख्यी वमन खिलण मै पास बाग का माली कोन्या।।

नोटंकी ''सांग में फूल सिंह अपनी प्रियतमा नोटंकी को हार लेकर मिलने जाता है। शारीरिक सौंदर्य एवम् मिलन के मणि कांचन प्रयोग के साथ–साथ शाब्दिक सौंदर्य एवं लयात्मकता देखिए–

सुन–सुन छननन करती चालै,
चालै–चाल छबीली।
लचक तीन पड़ै मुड़ तुड़कै, काया करके ढ़ीली,
होणं पै पान्नां की लाली, मिठ्ठा बोल रसीली,

चन्द्रमा सा चेहरा दमकै, चमकै आंख्य कटीली,
श्याम धड़न की अक्कल कडै तै, आई बै माता नै,
आनंद होण लगे काया मै, जब हाथ मिले हाथां मैं,
मिसरी केसी डली घुलण लगी, आपस की बातां मैं।

''सेठ ताराचंद'' में चन्द्रगुप्त व धर्म मालिकी के विवाह में ''छन'' (कोई दोहा करने पर उपहार दिया जाता है) संस्कार के समय पर कवि ने मनोरमा उपमा दी है। ''सिंहनी–सेर'' तथा ''धर्ममालिकी'' को नए सन्–संवत् का (अर्थात् तथा यौवन) ''संतरा'' की उपमा दृश्टव्य है–

छन–पकिया, छन–पकिया दोहा छन का,
चलता मेहमान, बटेऊ ढ़ाई दिन का,
ब्याह मै किसा सुथरा रंग ला दिया,
सरा सूत्या सहर जगा दिया,
सिंहनी के संग ब्याह दिया शेर बन का,
झलक लागै गोरे गाता मैं, न्यं के पेट भरे बातां मै,
दे दिया तेरे हाथां मै सन्तरा नए सन का।।

विवाह के उपरान्त दोनों के हाव–भाव व रूप सौंदर्य की सुंदर एवं परम्परा से हटकर बाजों को तीसरे प्राणी पर झगड़ते हुए दर्शाया है। भक्ति–भाव, रूप सौंदर्य एवं प्रकृति सौंदर्य की मिली–जुली झलक देखिए–

ब्याह ली बहू की सूरतीवर मै,
छोनूआं की नजर लाग रही हर मै,
जैसे समुद्र मैं चांद खिला, सब हूर मानती लाज,
रूप का था जोर सेठानी पै,
दोनू बतलावै थे कैसे, दोनूआं की नजर मिलै थी ऐसे,
जैसे अम्बर मै करै थे कला, झगड़ रहे दो बाज,
तीसरी ज्यान बिराणी पै।।

सांग ''चाप सिंह'' में सोमवती अपनी मां के सामने अपने सौंदर्य का वर्णन करती है। सोमवती के फूलों जैसे कोमल शरीर पर ईश्क की त्रिशु लग गई है। यौवन में लहर उठ रही है–

''मारू लगी इश्क रूपी त्रिशुलां की, गात चमेली कैसे फलां की,
सै ढेरी, मेरा बालम ले खुशवोई री, यो जोवल लहरे लेरया।।''

चाप सिंह को स्वपन आता है। स्वपन में उसे सोमवती के पास सावन की ''तीज'' को मिलने का वादा याद आता है। स्वपन की कल्पनाओं में खोया चाप सिंह ने ससुराल पहुंचकर जो रेखा – उसके वर्णन में कवि ने सौंदर्य के सभी तत्वों का समावेश कर दिया है। देखिए सौंदर्य – भाव का सजीव चित्रण –

लोक साहित्य लिखित व मौखिक संरचनाओं का सार है जिसने हमें नितान्त बेलौस – बेलाग रूप में मनुश्यता का पाठ पढ़ाया है । पुनः समाज की अभिजात्य चेतना जिसे अपनी लापरवाही में एकदम उपेक्षणीय समझने की भूल करती रही है , उसके अंहकार का संस्कार भी लोक साहित्य के माध्यम से ही सम्भव है।

लोक साहित्य से मनुश्य विभिन्न विधाओं की सामाजिक विचारधारा , विश्वास , कला से तादात्म्य स्थापित करता है। व्यक्ति इससे दूर नहीं हो सकता , क्योंकि यह सांस्कृतिक पक्ष को पूर्ण रूप से निर्वहन करता है , जो कि मनुश्य की पल – पल की बाह्य व आन्तरिक विचारधारा की कसौटी है। संस्कृतियों के पुनीत इतिहास की परख अनेकांश में लोक साहित्य से संभव है। महात्मा गाँधी के निम्नलिखित शब्द जिनमें लोक साहित्य के सांस्कृतिक पक्ष की महता प्रकट की गयी है , चिरस्मरणीय रहेंगे – हाँ , लोकगीतों की प्रशंसा अवश्य करूँगा , क्योंकि में मानता हूँ कि लोकगीत समूची संस्कृति के पहरेदार होते हैं। 'गुजराती मनाशी काका कालेलकर ने लोक साहित्य के सांस्कृतिक पक्ष को इन शब्दों में व्यक्त किया है – ' लोक साहित्य के अध्ययन से , उसके उद्धार से हम कृत्रिमता का कवच तोड़ सकेंगे और स्वाभाविकता की शुद्ध हवा में फिरने – डोलने की शक्ति प्राप्त कर सकेंगे। स्वाभाविकता से ही आत्मशुद्धि संभव हैं। '
हम कह सकते हैं कि लोक साहित्य जन – संस्कृति का दर्पण है।

लोक साहित्य में साम्प्रदायिकता का पक्ष निर्बल है। वह पक्षी व पवन की तरह स्वछन्द है। उसे शाक्त और वैश्णव की आलोचना से कोई सरोकार नहीं है। उसे विश्णु की पूजनीय श्रद्धा उतनी ही प्यारी है
,
जितनी कि शक्ति या काली आराध्या। उसकी निर्गुण व सगुण काव्यधाराओं में कोई असमानता नजर नहीं आती । लोक साहित्य की इन्हीं उदात्त – भावनाओं ने मनुश्य के लिये प्रेरणा – स्त्रोत का काम किया है।

लोक साहित्य ने मानव को ग्रहण करने के लिये अवर्णनीय बातों को प्रस्तुत किया है , जिसके बिना व्यक्ति के राग – विराग मौन है। लोक साहित्य में वे सभी परम्परागत तथ्य हैं जो मनुश्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक साथ रहते हैं। लोक गाथाएं के किस्से , अवदान या सांके हैं जिनकों काव्यमय कहानियों की सज्ञां दी जाती है , जिन्हें कालक्रम से ऐतिहासिक महत्व प्राप्त हो चुका है। लोकमानस की वे घटनांए है जो कोरी – कल्पनाजन्य है। यह मानवीय जीवन का अंहम हिस्सा है , जिनसे मानव अपने समाज – जगत् की सारी मान्यताएँ , रीति – रिवाजों को इन गाथाओं से सीखकर समाज में नया जीवन धारण करता है , यही लोक साहित्य की महान उपादेयता है।

निश्कर्शः
लोक साहित्य के प्रथम चरण में मानव – जीवन की लोकानुभूति के प्रेरणातत्व है। लोक साहित्य ने सांस्कृतिक पक्ष को जितना गहरा किया है , शायद ही किसी शास्त्र ने किया हो । कला के क्षेत्र में हो चाहे , कथा के क्षेत्र में , हर पहलू का पूर्ण रूपेण व्याख्यान लोक साहित्य ही करता है। दादी से पोती तक इसकी रसधारा का आनन्द सहर्श लेती है। भारतीय समाज का ढांचा किस प्रकार का रहा है यह लोकगीतों , लोककथाओं और लोकोक्तियों से भली भाँति समझ में आ जाता है। सास – बहु का कटु संबंध , ननद भौजाई वैभनस्य , विप्रयुक्ता तथा विधवा की दशा का मार्मिक एंव तथ्यपूर्ण वर्णन किसी लिखित रूप में उतना मार्मिक नहीं मिलेगा जितना भाई बहन के निरिह, निश्छल कोमल प्रेम के उदाहरण ! क्या ये सब कल्हण की राजतंरगिणी , अश्टादश पुराण और टॉड राजस्थान आदि महान् ग्रन्थों में देखने को मिलेगे? शिशु जन्म पर होने वाले सामाजिक सरोकारों का वर्णन लोक साहित्य में ही मिलता है।